

DPN 6866

Title : ~~Frā~~ ~~Frā~~
MANTRA ~~SA~~ ~~SA~~

Run. No. 7591

Cat. No.

Micro. No.

Subject ~~Frā~~ Mantra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 26 x 12.3

Folios 9

Lines (in a page) 7 irregular

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

स्वस्ति श्री सायं

* आरुनिश्यांग वा नैवं २॥ वना रुश्याभिराषि जलपट्टिराषु का
 लोचनराकाया पतिराषु से तो चवराहा नि नुता तपतिरा
 षु नरसि गविरवा न्या हा तपतिराषु गो रष भाथ मता रिता
 ननु स्यात्पति कुं मतिराषु पाननुषि भइरव वा तो इराषु को
 किता भइरवा

१२३४

गारसि गलाइ से वागारिका सा यो मंत्र मंतर मुरा
 फलाइ श्यांग वा नर के फले पमि कु न ल क न्या कइ
 न यो गुरु को वच न वेरर्थ हो न कइ न

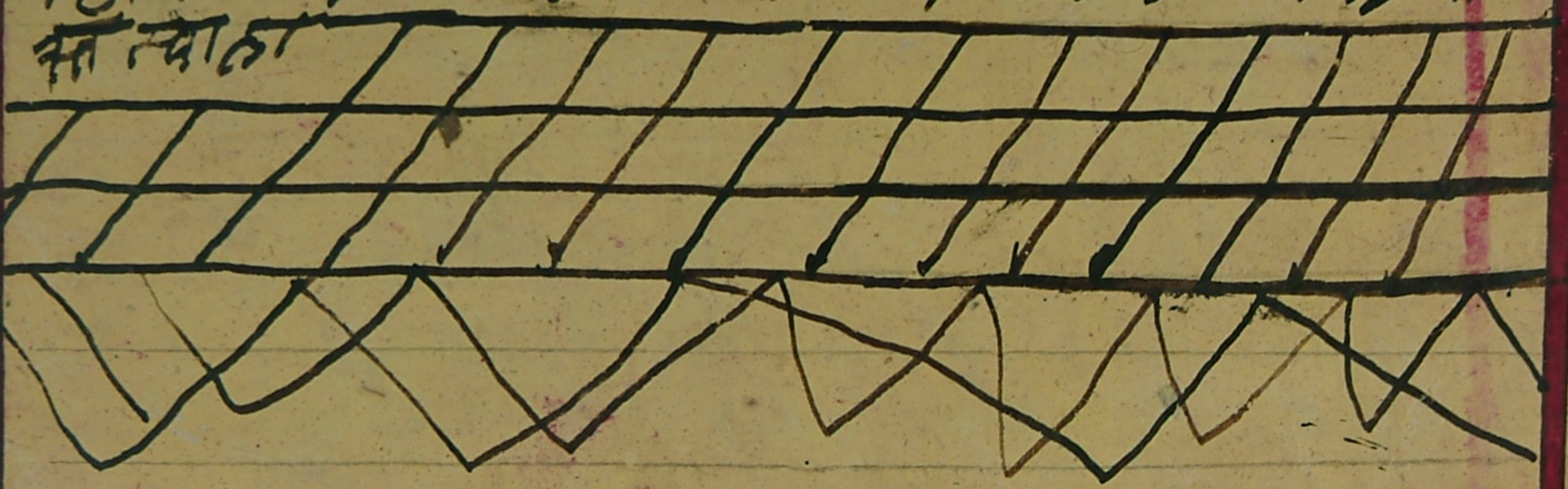


ब्रह्माहं ब्रह्म नरसिं ग पाताल नरसिं ग च उदिसाहा
रसिं ग भद्रास न व लषा नृरसिं ग च कुं वा रा चला
उ व र्ज वा न च ला उ हा म गु न कि स ति कु मं च
कि वा सा

श्रीकृष्ण इत्यां गवां न्या रश्मि लला इ शार नु पाया प नित्य ही मंत्र
लै शार नु रश्मि लला को आ धिला ग्या को प नित्य भुत ला ग्या को प
नित्य को लो ला ध न्या का कृ गुरु का मंत्र वे ध लो न्या मे

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 तिरासुते चोचरादा निरुहात पतिराषनु नरसिगवि
 रवा न्याहा तपतिराषनु मोरषनाथमुटा तिराषनु त्वरत्वा
 तिकुंम निराषनु पानमुषि ॥ २ ॥

ठरुमा नवा तो इराष न को किछा म इरव वो तो इराष
 न को किछा म इरव वा तो इराष न निमाल दोरे मा
 थ कुं दे न दि जागे जागे सा त दि न न नमान न्या का
 स त्वा ना



न उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव
 उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव

उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव
 उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव

उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव
 उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव उवाव

योमंत्र आकर सांगुंग कां न्यामंत्र योमंत्र आकर नाग
 पति परदा यकले कटा इहिंदा दर लागन्य वेला मायध
 नुर यो गुरु लेख वेगर न्या कुन गुरु को वच न वेथे
 माकुइ न निज चय सवे हो ला

५३
 प्रसाधा संगुह कुंदात मेराषो वगाफेन जल वांधुं थल
 वांधुं मुगि रिरथ मरिमसा न वांधुं मुसं रगा थ मेरुं ना
 थलमारुध तपिताको रखा करे ती संगुह क मगति प्र
 मंत्र कि वाचा यकालि वाचा दु वालि वाचा ति रिया लि वाचा

16 | 14 | 17 | 2 | 19 | 10 | 15 | 5 | 18 | 16 | 14 | 10

तेन भुक्तिमिलितस्य धनलाभा हेतुः सुखं धृतिमिहासिद्धं
कासं तान् द्रष्टुं दौष्ट्यं दौष्ट्यं दौष्ट्यं दौष्ट्यं दौष्ट्यं दौष्ट्यं
धृतिमिलितस्य धनलाभा हेतुः सुखं धृतिमिहासिद्धं
नमो तव त्वागदित्यु रत्ना कादमन भया कम्पि कम्पि तन
के उग्र इति मिलिते वि ति गर तव त्वागदित्यु रत्ना कादमन भया
सुभुक्तिमिलिते भया कौ वचन तत्पुत्रि भी मरुत कामनमा
त्या नंद भो सुलो क सुवरन दुष्टो दि कन सुभुक्तिमिला इ
पथा या वा हा प्रात मर धृतिमिलिते भया कौ वचन मानि

कन मा हों दु गी व न मा हा रत्ना कादमन भया कम्पि कम्पि तन
रत्ना ग या वा दित्यु व ने ल हा ति मिं तत्पुत्रि क म द ग र
त्ना कौ द वि मा हा रत्ना कादमन भया कम्पि कम्पि तन
कस्तु ति गर कन द्वा द म ग र्ग र त पुत्रि म गरि दु ई हा त जो
वि ति ग या हे म वि च र मे र सं तान् द न वि ति लो क उ
प्रा र म इ र म प्र ति ण ल ग न्या प नि को हि भ ये न ये त का
रत्ना मा हा म पा या त्या भ या त पा इ व द र वि च र हो मे र उ
धार हो ला भ नि वि ति ग न्या का भ नि र माल भ या र
वि च र ले म्पा ग र क न हे मि म र्ग नो ल म्पा भा व ना

मसंतद भगना ना नाया व भगार अ वि व स्या को धा उमा ग
 के ना ना प्रातः प्रातः ग के हे मा ग म त मा इ को सं ता न भू ने मो
 तो ला के हि सन्दे न न मा न मे से भा मि र धा द वे धा न से न भू
 पूरा र मे क न ब ला इ ग न ह व स यो न्या मि क व च न सु मि
 र ना वि दा भ या न्या पूरा दे स क न जो दा भ या र वि मि स्वर ले भ
 न्या को स वे न्या पूरा र मि धि क ती र मा ना न्या नंद मि त व स्या
 बा हा प्रातः वि का कि पा ले मु ल्ये त सुं द रि र रि र मा न कि न
 ति स ल धि न त सं गु क्त भ या कि द म यं ति कं न्या ज न्मी र
 द मं यं ति नै पु त्र भ यो भ नि ना ना प दि के हि स म य मा ना

ना वि र त्ये न ग ना का ना भ मा ना व स्या का भा त त त भू इ क
 क न द म यं ति का रु प गु न का व ना उ ना ग न्या र यो द म यं टि का
 गु म न प को व ना उ ना लु नि क गु न त त त ना को भू टि उ लो वे दे ला
 भ यो यो द म यं को रु प गु न को व र्णा उ त्त न्या प दि क मे री उ
 नि क र ग न्या प नि द म यं टि को लि क न ग त दि न द म यं ति भ
 नि क न ना उ लि क्ता को प नि स मु रे न वी भ या ज स्ता भ या
 त व सं गि त रु ले भ इ ग न्या र ट दि न द म यं टि भं न क्ता ना
 व से

ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ श्रीसारदादेव्यै नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

९

नमः पुनस्तुत इतका रोमला रोमला ले केहि रते लख नरकाक
प्राप्तनिमित्त दुषका अह गन्या छं ता मिठकु का कलाभ्र भाग
न्या मिमिर्त ले सँता नम दे न केहि भ्रु कि म गन्या कि धिभो कि
पुनर्व न नम का का रण हूँ तो किता मिठनु ले क्ता उ पाइ गन्या

